कथा सरिता

मिट्टी का खिलौना

एक गाँव में एक कुम्हार रहता था। वो मिट्टी के बर्तन व खिलौने बनाया करता था और उसे शहर जाकर बेचा करता था। जैसे-तैसे उसका गुज़ारा चल रहा था। एक दिन उसकी बीवी बोली कि अब यह मिट्टी के खिलौने और बर्तन बनाना बंद करो और शहर जाकर कोई नौकरी ही कर लो, क्योंकि इसे बनाने से हमारा गुज़ारा नहीं होता, काम करोगे तो महीने के अंत में कुछ धन तो आयेगा। कुम्हार को भी अब ऐसा ही लगने लगा था, पर उसको मिट्टी के खिलौने बनाने का बहुत शौक था, लेकिन हालात से मजबूर होने कारण वो शहर जाकर नौकरी करने लगा। नौकरी करता ज़रूर था पर उसका मन अब भी अपने चाक और मिट्टी के खिलौने में ही रहता था।

समय बीतता गया। एक दिन शहर में जहाँ वो काम करता था, उस मालिक के घर पर उसके बच्चे का जन्मदिन था। सब महंगे-महंगे तोहफे लेकर आये, कुम्हार ने सोचा क्यों न मैं मिट्टी का खिलौना बनाऊं और बच्चे के लिए ले जाऊं, वैसे भी हम गरीबों का तोहफा कौन देखता है। यह सोचकर वो मिट्टी का खिलौना ले गया। जब दावत खत्म हुई तो उस मालिक के बेटे को और जो भी बच्चे वहाँ आये थे सबको वो खिलौना पंसद आया और सब ज़िद्द करने लगे कि उनको वैसा ही खिलौना चाहिए। सब एक दूसरे से पूछने लगे कि ये शानदार खिलौना लाया कौन, तब किसी ने कहा कि यह तोहफा आपका नौकर लेकर आया।

सब हैरान, पर बच्चों के ज़िद्द के लिए मालिक ने उस कुम्हार को बुलाया और पूछा कि तुम ये खिलौना कहाँ से लेकर आये हो, इतना महंगा तोहफा तुम कैसे लाए? कुम्हार ये बातें सुनकर हँसने लगा और बोला, माफ कीजिए मालिक, यह कोई महंगा तोहफा नहीं है, यह मैंने खुद बनाया है, गाँव में यही बनाकर मैं गुज़ारा करता था, लेकिन उससे घर नहीं चलता था इसलिए आपके यहाँ नौकरी करने आया हूँ। मालिक सुनकर हैरान हो गया और बोला कि तुम क्या अभी यह खिलौने और बना सकते हो, बाकी बच्चों के लिए? कुम्हार खुश होकर बोला, हाँ मालिक। और उसने सभी के लिए शानदार रंग-बिरंगे खिलौने बनाकर दिए। यह देख मालिक ने सोचा कि क्यों न मैं खिलौने का ही व्यापार करूँ और शहर में बेचूं। यह सोचकर उसने कुम्हार को खिलौने बनाने के काम पर ही लगा दिया। और बदले में हर महीने अच्छी तनख्वाह और रहने का घर भी दिया। यह सब पाकर कुम्हार और उसका परिवार भी बहुत खुश हो गया और कम्हार को उसके पसंद का काम भी मिल गया। इस कहानी का मूल अर्थ यह है कि हुनर हो तो इंसान कभी भी किसी भी परिस्थिति में उस हुनर से अपना जीवन सुख से जी सकता है।

संयम

एक बार की बात है, जब गौतम बुद्ध अपने एक शिष्य के साथ भ्रमण पर निकले। गौतम बुद्ध अपने शिष्यों को लेकर क्रुरु नगर पहुंचे। लोगों का कहना था कि वहाँ की रानी बहुत क्रूर थी। इसलिए उस नगरी को क्रुरु नगर के नाम से जाना जाता था। ऐसे में जब वहाँ की उस क्रूर रानी को ये मालूम हुआ कि गौतम बुद्ध अपने शिष्य के साथ क्रुरु आए हैं तो रानी ने अपने नौकरों को गौतम बुद्ध के पास भेजा। रानी ने अपने सेवकों को ये भी कहा कि वे लोग गौतम बुद्ध का अनादर करें क्योंकि उन्होंने क्रुरु नगर में प्रवेश किया है। सेवकों ने उन्हें भला बुरा कहना शुरू कर दिया। सेवकों ने गौतम बुद्ध को काफी दुत्कारा। यहाँ तक कि उन लोगों ने उनका काफी अपमान भी किया। रानी के सेवकों द्वारा गौतम बुद्ध का लगातार अपमान किए जाने पर गौतम बुद्ध के शिष्य को काफी गुस्सा आया। गुस्से से लाल शिष्य ने गौतम बुद्ध से बोला कि हमें यहाँ से फौरन निकल जाना चाहिए। कैसे आप इतना अपमान सुनकर भी चुप हैं! जहाँ हमारे साथ इतना दुर्व्यवहार हो रहा हो, हमें वहाँ एक भी क्षण नहीं ठहरना चाहिए। चलिए हम लोग कहीं और चलते हैं जहाँ आपका आदर और सम्मान हो। शिष्य की ये बातें सुनकर गौतम बुद्ध बोले - ऐसा ज़रूरी नहीं है कि बस जहाँ हमारा आदर हो हमें वहीं जाना चाहिए। और जहाँ अनादर हो वहाँ से फौरन चले जाना चाहिए। जहाँ आपके साथ बुरा व्यवहार हो रहा हो, उस स्थान पर तब तक रहना चाहिए, जब तक वहाँ शांति स्थापित ना हो जाए या फिर आपका अनादर करने वाला हार ना मान ले। बुद्ध ने इस घटना से अपने शिष्य को ये शिक्षा दी कि जैसे युद्ध में हाथी चारो ओर से तीर से वार को सहते हुए आगे बढ़ता है, वैसे ही हमें भी दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों की बातों को सहन करते रहना चाहिए क्योंकि दुनिया में सफल व्यक्ति वही है जो हर परिस्थिति में खुद को संयम में रखता है। दूसरों के अपशब्दों की वजह से कभी हमें अपना मन खराब नहीं करना चाहिए। इस कहानी से हमें ये शिक्षा मिलती है कि खुद को संयम में रख कर ही सफलता हासिल की जा सकती है। कामयाबी के नुस्खे हमें खुद से ही सीखने को मिल जाते हैं। साथ ही हमें कभी भी अपने साफ-सुथरे मन में दूसरों के अपशब्दों को नहीं आने देना चाहिए। दूसरे के दुर्व्यवहार की वजह से हम अपना संयम क्यों खोएं और क्यों उनके तरह ही पेश आएं!

समाधान

महात्मा बुद्ध अक्सर अपने शिष्यों को शिक्षा प्रदान किया करते थे। एक दिन प्रातः काल बहुत से शिष्य उनका प्रवचन सुनने के लिए बैठे थे। बुद्ध समय पर सभा में पहुंचे, पर आज शिष्य उन्हें देखकर चकित थे क्योंकि आज पहली बार वे अपने हाथ में कुछ लेकर आए थे।करीब आने पर शिष्यों ने देखा कि उनके हाथ में एक रस्सी थी। बुद्ध ने आसन ग्रहण किया और बिना किसी से कुछ कहे वे रस्सी में गाँठ बांधने लगे। वहाँ उपस्थित सभी लोग यह देख सोच रहे थे कि अब बुद्ध आगे क्या करेंगे! तभी बुद्ध ने सभी से एक प्रश्न किया, मैंने इस रस्सी में तीन गाँठें लगा दी हैं। अब मैं आपसे ये जानना चाहता हूँ कि क्या यह वही रस्सी है, जो गाँठें लगाने से पूर्व थी? एक शिष्य ने उत्तर में कहा, गुरूजी इसका उत्तर देना थोड़ा कठिन है, ये वास्तव में हमारे देखने के तरीके पर निर्भर है। एक दृष्टिकोण से देखें तो रस्सी वही है, इसमें कोई बदलाव नहीं आया है। दूसरी तरह से देखें तो अब इसमें तीन गाँठें लगी हुई हैं जो पहले नहीं थीं। अतः इसे बदला हुआ कह सकते हैं। पर ये बात भी ध्यान देने वाली है कि बाहर से देखने में भले ही ये बदली हुई प्रतीत हो पर अंदर से तो ये वही है जो पहले थी। इसका बुनियादी स्वरूप अपरिवर्तित है, सत्य है। बुद्ध ने कहा कि अब मैं इन गाँठों को खोल देता हूँ। यह कहकर बुद्ध रस्सी के दोनों सिरों को एक दूसरे से दूर खींचने लगे। उन्होंने पूछा, तुम्हें क्या लगता है इस प्रकार इन्हें खींचने से क्या मैं इन गाँठों को खोल सकता हूँ? नहीं नहीं, ऐसा करने से तो ये गाँठें और भी कस जाएंगी और इन्हें खोलना और मुश्किल हो जाएगा। एक शिष्य ने शीघ्रता से उत्तर दिया। बुद्ध ने कहा कि ठीक है, अब एक आखिरी प्रश्न बताओ। इन गाँठों को खोलने के लिए हमें क्या करना होगा? शिष्य बोला, इसके लिए हमें इन गाँठों को गौर से देखना होगा, ताकि हम जान सकें कि इन्हें कैसे लगाया गया था, और फिर हम इन्हें खोलने का प्रयास कर सकते हैं। मैं यही तो सुनना चाहता था। मूल प्रश्न ही यही है कि जिस समस्या में तुम फंसे हो, वास्तव में उसका कारण जाने बिना निवारण असम्भव है। मैं देखता हूँ कि अधिकतर लोग बिना कारण जाने ही निवारण करना चाहते हैं। कोई मुझसे ये नहीं पूछता कि मुझे क्रोध क्यों आता है, लोग पूछते हैं कि मैं अपने क्रोध का अंत कैसे करूँ? कोई यह प्रश्न नहीं करता कि मेरे अंदर अहंकार का बीज कहाँ से आया, लोग पूछते हैं कि मैं अपना अहंकार कैसे खत्म करूँ ? और फिर महात्मा ने शिष्यों को समझाते हुए कहा, जिस प्रकार रस्सी में गाँठें लग जाने पर भी उसका बुनियादी स्वरूप नहीं बदलता, उसी प्रकार मनुष्य में भी कुछ विकार आ जाने से उसके अंदर से अच्छाई के बीज खत्म नहीं होते। जैसे हम रस्सी की गाँठें खोल सकते हैं वैसे ही हम अपनी समस्याएं भी हल कर सकते हैं। इस बात को समझो कि जीवन है तो समस्याएं भी होंगी ही, और समस्याएं हैं तो समाधान भी अवश्य होगा, आवश्यकता है कि हम किसी भी समस्या के कारण को अच्छी तरह से जानें, निवारण स्वतः ही प्राप्त हो जाएगा। महात्मा ने अपनी बात पूरी की।

पठानकोट-पंजाब। मदर्स डे पर आयोजित कार्यक्रम में तृप्ता पुंज,मैनेजिंग डायरेक्टर,श्री साईं ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स, तथा एस.के. पुंज,डिस्ट्रीक्ट गवर्नर, इंटरनेशनल लॉयन क्लब और चेयरमैन,श्री साईं ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सत्या तथा ब्र.कु. प्रताप।

दिल्ली-आर.के. पुरम। ज्ञानचर्चा के पश्चात् ऑल इंडिया रेडियो की डेप्युटी डायरेक्टर जनरल शैलजा सुमन को ईश्वरीय साहित्य व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता। साथ हैं ब्र.कु. ज्योति।

चौमहला-राज.। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजित व्यसन मुक्ति प्रदर्शनी का फीता काटकर शुभारम्भ करते हुए सरपंच प्रदीप डोसी, किराना व्यापार संघ अध्यक्ष संजय जैन, हेड कॉन्स्टेबल राम सिंह, किराना व्यापार संघ जिला उपाध्यक्ष दिनेश जैन, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

अलीगढ़-उ.प्र.। रमज़ान के महीने में 'एक ईश्वर, एक धरती, एक इंसान' विषयक कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डॉ. ताँकीर आलम,डीन,थियोलॉजी डिपार्टमेंट, अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी। मंचासीन हैं कवि प्रेम प्रकाश पटाखा, नरेन्द्र शर्मा तथा ब्र.कु. सुनीता।

भीनमाल-राज.। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् उपस्थित हैं गायत्री परिवार के सदस्य कोलीजी सोनी, भारत विकास परिषद के प्रांतीय संरक्षक नैनाराम चव्हाण, आनन्द गृह उद्योग के मालिक जोगाराम चौधरी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता, ब्र.कु.कीर्ति, ब्र.कु.संध्या, ब्र.कु.लक्ष्मण तथा अन्य।

दसुआ-पंजाब। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर कार्यक्रम का रिबन काटकर शुभारम्भ करते हुए डॉ. कपिल डोगरा,एस.एम.ओ.,डेंटल मुकेरियन, ब्र.कु. समन, ब्र.कु. स्मृति तथा अन्य।